सम्पादकीय

अल्बर्टा हिन्दी परिषद के दसवें वार्षिकोत्सव के अवसर पर मैं सम्पादक मण्डल एवं परिषद की ओर से हिन्दी भाषा प्रचार प्रसार के लिए समर्पित एकनिष्ठ कार्यकर्त्ताओं, समर्थकों एवं पुरोधाओं का हार्दिक अभिनन्दन करता हूं, जिनके गरिमापूर्ण प्रयास एवं लगन के कारण परिषद अपने लक्ष्य की ओर निरन्तर अग्रसित हो रही है।

"भारतस्य प्रतिष्ठे द्वे संस्कृतं संस्कृतिस्तथा"
"बिना संस्कृतिं भारतीया कथं वै"

भारत की दो प्रतिष्ठाएं हैं - संस्कृत और संस्कृति बिना सभ्यता और संस्कृति के हममें भारतीयता का पुट नहीं रह सकता। इसलिए यह सत्य है कि भाषा संस्कृति की आधारशिला, मेरूदण्ड होती है अथवा वह सशक्त माध्यम होती है जिसके सहयोग से हजारों मील की दूरी पर होते हुए भी अपनी संस्कृति का पूर्ण रूपेण संवर्द्धन कर सकते हैं।

यह एक पूर्ण सत्य है कि जो समाज, राष्ट्र अथवा जाति अपने अतीत का विस्मरण कर देती है वह सुन्दर भविष्य का निर्माण नहीं कर सकती। और जो केवल पुरातन की दुहाई पर मोहावृत रह वर्तमान से आँख मिचौनी खेलते हैं वह इतिहास में अपना स्थान नहीं बना पाते। इसलिए आवश्यक है कि उभय परिधियों के वृत्त से कोई मध्यम मार्ग खोजना होगा जो पूर्वाग्रहों - विरोधों से परे हो तथा भाषा एवं संस्कृति के प्रवाह में सहयोगी भी।

आज के वातावरण में हमारा उत्तरदायित्व और अधिक बढ़ जाता है जब कि चारों ओर अनिश्चितता, निराशा, रंगभेद, जातिभेद - तमिस्रा का श्याम आँचल हमारी संस्कृति से ही नहीं, हमारी भावनाओं, अस्तित्वों, आस्थाओं के साथ भी उन्मुक्त खेल खेलने का मन बना रहा है, और हम सावन के गीतों में अपनी सुधबुध भुलाए यन्त्रवत चले जारहे हैं। हमारे कहने का अभिप्राय विरोध का मार्ग अपनाकर अपने लक्ष्य की ओर बढ़ना नहीं है, अपितु सहयोग और बोध का आलम्बन आवश्यक है। इस उन्नति में भाषा हमारे लिए रामबाण सिद्ध होगी।

यह एक पूर्ण सत्य है कि हम जब भी किसी विधा से पराजित होते हैं, उस पराभव कुण्ठा से स्वयं को मुक्त करने के लिए स्वयं को निर्दोष कहने के लिए मानव मन सम्मानजनक तर्कों, शास्त्रवचनों, भाग्य, कर्म वातावरण आदि का सहारा लेकर अपने को सन्तुष्ट कर लेता है। परन्तु यह सन्तोष कितना घातक हो सकता है इसका अनुमान स्वप्न में भी नहीं होगा। भाषा के माध्यम से अपार जनसमूह के जनमानस को संगठित कर उनमें राष्ट्रप्रेम, सौहार्द्र एवं सजगता का स्वतःस्फूर्त स्वर मुखरित कर विश्व बन्धुत्व की आकुन्चित हो रही वीथियों को प्रसारित तथा सुरक्षित किया जा सकता है। जिससे जन जन के अन्तस्थ से सत्यमेव जयते का समवेत नाद न केवल एक राष्ट्र के अपितु विश्व के विभीषिकापूर्ण वातावरण को एक नयी दिशा प्रदान कर सकता है।

इस स्मारिका के माध्यम से प्राचीन संस्कृति संवाहिका - हिन्दी भाषा का कभी न प्रशमित होने वाला दिया जलाया जा रहा है, जिसके सूक्ष्म किन्तु सशक्त स्वर शब्द प्रकाश पुंज में वर्तमान प्रवासी समुदाय का ध्यानाकर्पण कर स्वभाषा प्रचार प्रसार के समस्त प्रत्यूह-व्यूहों से प्रथक हो इस गम्भीर एवं महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व में पूर्ण सहयोग का मौन आमन्त्रण भी दिया जारहा है - "उत्तिष्ठ" उठो, "जागृत" जागो, जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाय तब तक प्रयास करते रहो, यही संदेश है।

इस वार्षिकोत्सव प्रदीप में मैं उन सभी ज्ञाताज्ञात भाषा प्रेमियों का अभिनन्दन करता हूं जो भाषा त्रिपथगा को प्रान्जलता प्रदान कर उसे सुरक्षित एवं सुविकसित करने में कटिबद्ध हैं। हमारा अनुरोध है प्रयास है - अजस्र धारा न सही हम बिन्दु बिन्दु से ही अपने संस्कृति घट को पूर्ण करने का प्रयास करते रहें तो एक दिन अवश्य अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। इस स्मारिका में जिन महानुभावों के लेख, कविताएं, निबन्ध आदि प्रकाशित हैं हम उनका भी आभार व्यक्त करते हैं। परिषद की उन सभी सहयोगी संस्थाओं, स्वयं सेवकों, अल्बर्टा विश्वविद्यालय एवं सरकारी विभागों तथा भाषा प्रेमियों के भी हम अनुग्रहीत हैं जिनके सर्वविध सहयोग से परिषद अपने आयोजन में सफल हो सकी है।

आचार्य शिवशंकर प्रसाद द्विवेदी
व्याकरणाचार्य, स्वर्णपदक लब्ध
प्रधान सम्पादक